Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अपराजिता पौधे के दैवीय औषधीय एवं प्राकृतिक गुण

डॉ. मनीषा दण्डवते*

* विभागाध्यक्ष (वनस्पतिशास्त्र) भेरूलाल पाटीदार शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महू (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – 'अपराजिता' जिसका वानस्पतिक नमा 'क्लिटोरिया टर्नेटिया' है, जो कि फैबेसी/लेग्युमिनोसी कुल का सदस्य है, एक अत्यंत महत्वपूर्ण पौधा है। इस पौधे का धार्मिक, ज्योतिष एवं औषधीय महत्व है। इसके नीले फूलों की चाय 'ब्लू टी' के नाम से एक लोकप्रिय पेय पदार्थ है, जिसे लोग 'तरोताजा' (Refreshing) महसूस करने के लिए पीते हैं। यह पौधा सही दिशा में लगाने पर 'वास्तुदोष' को दूर करता है एवं 'नकारात्मकता' को दूर करता है।

इसमें 'एंटीऑक्सीडेन्ट', 'ऐंटीफंगल' एवं 'एंटीबैक्टीरियल' गुण होते हैं।

इसके नीले फूल विष्णु भगवान एवं देवी दूर्गा को चढ़ाना पवित्र माना जाता है। इसके औषधीय गुणों के कारण इसका आयुर्वेदिक औषधियों में चिकित्सकीय उपयोग किया जाता है। अपराजिता का उपयोग याददाश्त बढ़ाने में एवं तनाव को कम करने में किया जाता है।

शब्द कुंजी – आयुर्वेदिक औषधी, चिकित्सकीय उपयोग, ब्लू टी, एन्टीऑक्सीडेन्ट, तनाव।

प्रस्तावना – भारतीय आयुर्वेद में जिसे आमतौर से 'अपराजिता' के नाम से जाना जाता है, जिसका वानस्पतिक नाम 'क्लिटोरिया टर्नेटिया' है जिसे आमतौर पर 'एशियाई कबूतर' के रुप में जाना जाता है।[1] 'ब्लूबेलवाइन', 'ब्लू मटर', 'तितली मटर', 'कॉर्डोफन मटर' या 'डार्विन मटर' के नाम से भी जाना जाता है। यह 'फैबेसी'/लैग्युमिनोसी फैमेली का सदस्य है जिसका उपकुल पेपिलियोनेसी है। इंडोनेशियाई द्वीप 'टर्नेट' का मूल निवासी है।

यह एक बारहमासी, शाकाहारी पौधा है जिसके पत्ते अंडाकार एवं मोटे होते हैं, यह एक बेल या लता के रुप में बढ़ता है यह नम तटस्थ मिट्टी में अच्छे से बढ़ता है। इसकी खास विशेषता है इसके चमकीले नीले रंग के फूल जिसमें हल्के पीले रंग का निशान होता है कभी-कभी ये गुलाबी या सफेद रंगों में भी मिलते हैं। इसमें लंबी फली लगती है जिसमें 8-10 बीज होते हैं। नरम होने पर यह खाने योग्य होते हैं। इसे मुख्य रूप से सजावटी पौधे एवं पुनर्वनीकरण प्रजाति (जैसे ऑस्ट्रेलिया में कोयला खदानों में) के रुप में उगाया जाता है। खेती के दौरान इसे कम देखभाल की जरुरत होती है इसकी जड़ें 'रायजोबिया' नामक मिट्टी के जीवाणुओं के साथ सहजीवी (Symbiotic) संबंध बनाती है जो वायुमंडलीय N_2 को पौधे के उपयोग योग्य रूप में बदल देती है (Nitrogen Fixation) इसलिये इन पौधों का उपयोग मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने के लिये किया जाता है।

[1]क्लिटोरिया नाम क्लिटोरिस से लिया गया है क्योंकि इसके फूलों का आकार 'मानव योनि' के आकार जैसा दिखता है। इस पौधे का पहला संदर्भ जैकब ब्रेने द्वारा 1678 में दिया गया जो कि एक पोलिश प्रकृतिवादी थे। यह पौधा भूमध्यरेखीय एशिया का मूल निवासी है जिसमें दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के स्थान शामिल हैं यह अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया एवं अमेरिका में भी लगाया जाता है। इसके फूल का उपयोग एशिया द्वीप में प्राकृतिक रेशों को रंगने के लिये किया जाता है। पाक कला में दक्षिण पूर्व एषिया में फूल का उपयोग 'चिपचिपा चावल' और 'यूरेशियन पुट गुल' जैसी मिठाइयों में प्राकृतिक रंग देने के लिये किया जाता है।

साथ ही यह एक आयुर्वेदिक दवा भी है। बर्मी और थाई व्यंजनों में फूलों को मक्खन में डूबो कर तला भी जाता है। इसका उपयोग 'न्योन्या डिश पुलोट टार्टल' को रंगने के लिये भी किया जाता है।

'बटरफ्लाई मटर फूल चाय' सूखे टेरटेनिया फूलों से बनाई जाती है और तरल में जो भी रंग डाला जाता है उसके अनुसार रंग बदलती है। नींबू का रस इसे बैंगनी रंग में बदल देता है। 'थाइलैंड और वियतनाम में नींबू शहद युक्त चाय 'जलपान' के रूप में परोसी जाती है।' यह 'कैयोनाइल चाय' गरम एवं ठण्डी दोनों रूपों में उपयोग की जाती है।

अपराजिता का समानार्थी शब्द –

अपराजिता, श्वेतपुष्पा, विष्णुक्रांत, महाश्वेता, भावप्रकाश निघण्टु पुष्पवर्गश्लोक 45 में अस्फोटा, गिरीकर्णी, गोकर्णी, विष्णुक्रांता, शंखपुष्पी, सेफंदा, स्वेता, महोस्वेता, अश्वखुरा, जयंती आदि।

बवप्रकाश – धनवन्तरि निघण्टु, राजा निघण्टु के अनुसार

3 प्रकार वर्णित

1) अपराजिता
2) गिरिकर्णिका
3) अद्रिकर्णी

चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट के अनुसार वर्गीकरण – आयुर्वेदिक संहिता बृहत्रयी के अनुसार अपराजिता मुख्य रूप से शिरोविरेचन (मस्तिष्क शोधक) मेध्य (बुद्धिवर्धक) और विशनाशक जड़ी-बूटी के रूप में वर्गीकृत है। चरक और सुश्रुत ने इस सफेद (श्वेता) और नीली किस्मों के साथ विशैले विकारों और नस्य उपचार के लिये महत्वपूर्ण बताया है। आचार्य वाग्भट्ट (अष्टांग हृदय संग्रह) वाग्भट्ट ने इसे विषनाशक (Vishghna) और नस्य (Nasal

Administration) गुणों को प्रधानता दी है। यह मेध्य (स्मृतिवर्धक) औषधियों के रूप में भी जानी जाती है।

किस्में और मिलावटें –

1) नीले फूल

2) सफेद फूल (दोनों की पहचान 'सी टर्नेटिया लिन' के रूप में की गई) शंखिनी और शंखपुष्पी, उत्तर भारत में शंखपुष्पी का उपयोग कैंसकोटा डिक्युसेट के रूप में किया जाता है।

रासायनिक घटक – अपराजितिन, टाराक्सेरोल, रॉबिनिन, क्वेरसेटिन, केम्पफेरॉल, टर्नटिन्स

गुण – कटु तिक्ता, कसाय

वीर्य– शीत

विपाक– कटु

आयुर्वेदाचार्य डॉ. रितु चड्ढा के मुताबिक – नीले, बैंगनी या सफेद रंग के खूबसूरत दिखने वाले फूल न केवल सजावटी होते हैं बल्कि आयुर्वेद में इन्हें औषधीय गुणों का भंडार माना गया है।

इसे सुबह खाली पेट 'चाय' या 'जल' के रूप में पिया जाय तो यह शरीर को 'डिटॉक्स' करने के साथ क्लिटोरिया टर्नेटिया की पंखुड़ियों से बनी इस हर्बल चाय की जड़े आयुर्वेद और दक्षिण पूर्व एशियाई परंपराओं में है, जिसे भारत में अपराजिता या शंखपुष्पी के नाम से भी जाना जाता है। 'अपराजिता के फूल' में एंटीऑक्सीडेंट्स, क्लावेनोइड्स, एंथोसायनिन और एंटीइंफ्लेमेटरी गुण मौजूद होते हैं। जो पाचन, त्वचा, मस्तिष्क और ब्लड शुगर को कम करने में लाभकारी है। इसमें मौजूद 'एंथोसायनिक इंसुलिन' संवेदनशीलता को बढ़ाता है जिससे 'टाइप–2 डायबिटिज़' के मरीजों को लाभ मिल सकता है।

सुबह खाली पेट अपराजिता के फूलों की चाय पीने से दिनभर पाचन तंत्र दुरुस्त बना रहता है। तनाव और डिप्रेशन से राहत पाने के लिये भी अपराजिता के फूल की चाय बहुत लाभकारी होती है। इस फूल में मौजूद नेचरल कम्पाउण्ड मस्तिष्क को शांत करने चिंता, अनिद्रा, चिडचिडापन जैसी समस्याओं को कम करने में सहायक है यह ब्रेन एक्टिविटी को स्थिर करता है और मूड को बेहतर बनाता है।

कर्म – त्रिदोशरा, मेध्य, विसघ्न, चाकुस्या

जड़ – रेचक किंतु ऐंठन उत्पन्न करती है। जलोदर में उपयुक्त

रूटबार्क – मूत्रवर्धक (मूत्राशय और मूत्रमार्ग की जलन में प्रयुक्त)

जड़ का रस – क्रोनिक ब्रोंकाईटिस में कफ को पतला करने के लिये ठंडे दूध में दिया जाता है।

जड़, छाल, बीज और पत्तियां – गैस्ट्रिक अम्लता को दूर करने में उपयोगी। अपराजिता के जड़ में टेरेक्सेरॉन, जड़ में अपराजतिन एवं बीटा सिस्टेस्टिरॉल एवम् फूलों में कैफेरॉल पाया जाता है।

बाहरी उपयोग – यह सूजन और दर्द को कम करता है। इसमें रक्त संचार रोकने की क्षमता होती है इसलिये इसका उपयोग बवासीर में विशेष रूप से 'रक्तस्त्रावी बवासीर' में किया जाता है। इसके काढे से बवासीर साफ हो जाती है और पूरे पौधे का लेप उस पर लगाया जाता है। 'सिरदर्द' में पत्तियों के रस का उपयोग नाक की बूंदों (Nasal Drops) के रूप में किया जाता है। 'धमासा' के साथ उबाले गए तेल का उपयोग 'गठिया' रोग में मालिश के लिये किया जाता है। काढे का उपयोग 'मुख शोध' (Mouth Wash) में गरारे करने और घावों को साफ करने के लिये किया जाता है। यह मवाद बनने से रोकता है।

अपराजिता के फूल में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर को 'फ्रीरेडिकल्स' से बचाते हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली यानी इम्युनिटी को मजबूत बनाते हैं। इसके नियमित सेवन से सर्दी खांसी संक्रमण (Allergy) से लड़ने की क्षमता बढ़ती है। शरीर को डिटॉक्स और वजन कम करने में लाभकारी सुबह खाली पेट इस फूल की चाय पीने से 'लीवर' की सफाई होती है और 'यूरिनेश्न' के जरिए विशैले तत्व यानि 'टॉक्सिन्स' बाहर निकलते हैं। जिससे मटोबॉलिज्म तेज होता है और वजन कंट्रोल होता है। यह अनिद्रा को भी कंट्रोल करता है। मधुमेह या डायबिटिज टाइप–2 को कंट्रोल करने में रामबाण उपाय है।

अपराजिता का फूल नीले रंग का होता है और जब इसका काढा बनाया जाता है तो वह भी नीला होता है इसलिये इसे Blue Tea के नाम से जाना जाता है जो आजकल काफी लोकप्रिय है। इसे बनाने के लिए बर्तन में एक कप पानी उबालकर उसमें 4–5 नीले फूल डालें फिर छानकर शहद मिलाकर पीने से लाभकारी है।

इसके फूल – Antioxidant, Antibacterial, Anti Fungal, Antidiabitic गुण वाले होते हैं।

इसके फूल गाय के कान के आकार के होते हैं इसलिये इसे गोकर्णी भी कहते हैं।

संस्कृत में इसके नाम – गोकर्णी, गिरिकर्णी, योनिपुष्पा, विष्णुक्रांता, अपराजिता आदि।

आंतरिक उपयोग

तंत्रिका तंत्र – इसका मस्तिष्क पर शांत प्रभाव पड़ता है। इसलिये इसका उपयोग बेहोशी, चक्कर और मस्तिष्क की कमजोरी जैसे लक्षणों में किया जाता है।

पाचन तंत्र – यह एक वमनरोधी, मृदुरेचक, पित्तशामक है। इसका उपयोग वमन, अपच, कब्ज, पीलिया और बवासीर में किया जाता है। कफ और पित्तनाशक इसका उपयोग जठर निर्गम (पाइलोरस) ग्रहणी के अल्सर आदि को ठीक करने में किया जाता है।

रक्तसंचार तंत्र – रक्तसंचारी और रक्तशोधक होने के कारण रक्तसारी विकारों और वातरक्त में उपयोगी है। चेचक की रोकथाम के लिए **धमासा** का गर्म काढा दिया जाता है।

श्वसन तंत्र – इसका उपयोग सर्दी–जुकाम, खांसी और अस्थमा में किया जाता है क्योंकि यह कफ निस्सारक और श्वसन अंग की जलन को कम करता है। गले की समस्याओं को दूर करने में काढ़ा उपयोगी है।

मानसवाह स्त्रोत – इसका लेप गर्दन की जकड़न पर लगाया जाता है।

मूत्र प्रणाली –यह पेशाब बढ़ाता है इसका काढ़ा मूत्र कृच्छ (डिसूरिया) में प्रयोग किया जाता है।

प्रजनन प्रणाली – शुक्राणुजन्य होने के कारण, यह वीर्य दुर्बलता में दिया जाता है।

त्वचा – इसका उपयोग विभिन्न त्वचा विकारों में किया जाता है।

तापमान – कडवे और ठंडे गुणों के कारण यह ज्वरनाशक और शीतलक है। कड़वा स्वाद बुखारनाशक, शीतलक और वात और कफ के कारण होने वाली उल्टी (वमन नाशक) जलन को कम करता है।

सात्विककरण – यह शारीरिक शक्ति और वजन बढ़ाता है।

संकेत – कुष्ठ, उन्माद, व्रण, सुला, जलोदर, मूत्रवर्धक, ब्रोंकाइटिस, ब्रेन टॉनिक, ट्यूबलर ग्रंथियां, मूत्रवर्धक, मनोभ्रंश, नेत्र, बवासीर, माइग्रेन,

मनोविकृति और उन्माद जड़े रेचक लेकिन रेचक के रूप में उपयोग नहीं किया जाता क्योंकि ये ऐंठन पैदा करती है।

प्रयुक्त भाग – जड़ / जड़ की छाल/बीज/पत्तियां

चिकित्सकीय उपयोग :

1) दंतसूला – अपराजिता की जड़ को मारिका के साथ मुंह में रखा जाता है, जिससे दांत दर्द में राहत मिलती है।
2) सोफा – गिरिकर्णिका के पत्तों का पेस्ट आंतरिक/मौखिक रूप से उपयोग
3) मानसरोग – सफेद फूलवाली अपराजिता की जड को चावल के पानी के साथ पीसकर घी में मिलाकर नस्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।
4) बच्चों की मानसिक क्षमता में सुधार के लिये इसकी जड़ को शहद के साथ सामान्य टॉनिक के रूप में किया जाता है।

अपराजिता (Clitoria ternatea) जिसे गोकर्ण या शंखपुष्पी भी कहा जाता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में एक महत्वपूर्ण पौधा है। यह न केवल धार्मिक बल्कि ज्योतिषीय महत्व भी रखता है एवं आयुर्वेद में भी इसके औषधीय उपयोग बताए गए हैं।

धार्मिक और ज्योतिषीय महत्व :

1) यह फूल देवी देवताओं को प्रिय माने जाते हैं विशेषकर भगवान विष्णु एवं शिव को चढ़ाने से उनकी कृपादृष्टि बनी रहती है। दुर्गापूजा में भी उपयोगी है।
2) इसे घर में लगाना शुभ माना जाता है और माना जाता है कि यह नकारात्मक उर्जा को दूर करता है।
3) ज्योतिषशास्त्र में अपराजिता का उपयोग गृह दोषों को दूर करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये किया जाता है।

आयुर्वेदिक उपयोग :

1) मस्तिष्क टॉनिक के रूप में जिससे याददाश्त, एकाग्रता और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।
2) तनाव को कम करता है और तंत्रिका तंत्र को शांत करता है।
3) यह पाचन में सुधार इम्युनिटी बढ़ाने और शरीर को डिटॉक्स करने में उपयोगी है।
4) एसिडिटी, डायबिटिज टाईप–2, सूजन रोधी है।
5) घावों को ठीक करने (खूनी बवासीर) एवं दर्द को कम करने में उपयोगी है।

बौद्ध धर्म में 'अपराजिता' को एक शक्तिशाली सार्वभौमिक राजा का प्रतिनिधित्व करने के लिये माना जाता है। (According to Wisdom library)

वास्तुशास्त्र में अपराजिता का पौधा सही दिशा में लगाने से 'सकारात्मक उर्जा' का संचार होता है। यह पौधा नजर दोष से भी बचाता है। इसका उपयोग तंत्र शास्त्र में भी बताया गया है शत्रुओं से विजय के लिये भी उपयोग किया जाता है। शनिवार को शनिदेव को अपराजिता के फूल चढ़ाना उत्तम होता है। (शनि की साढ़े साती और ढैय्या)

कुण्डली में मौजूद राहु–केतु दोष का प्रभाव कम करता है। अपराजिता की जड़ को अपने मुख्य द्वार पर लगाने से नकारात्मक उर्जा दूर होती है और परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम बढ़ता है जो उदारतापूर्वक चौरासी रत्न–जड़ित मठों की स्थापना करके शिक्षाओं का समर्थन करता है जो समुदाय के भीतर भक्ति के महत्व और बौद्ध सिद्धांतों के प्रचार पर प्रकाश डालता है। महायान (बौद्ध धर्म की प्रमुख शाखा) में महत्व स्त्रोत– 'महावस्तु महान कहानी'

'अपराजिता' की हिन्दू अवधारणा :

1) हिंदु धर्म में अपराजिता देवी दुर्गा का प्रतीक है जो 'अजेयता' का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें चिकित्सकीय प्रथाओं के लिये औषधीय पौधे शामिल है। (जो औपचारिक पूजा और नृत्य आंदोलन से जुड़ा हुआ है) जो आध्यात्मिकता और अनुष्ठान में इसके बहुमुखी महत्व को उजागर करता है। स्त्रोत – गरुड पुराण
2) ग्यारह रुद्रों में से एक 'तीन लोकों के स्वामी'
3) 'अजेयता' का प्रतिनिधित्व करने वाली 'देवी अनुष्ठान' के संदर्भ में सम्मानित

अपराजिता का महत्व और प्रतीकात्मकता :

1) अपराजिता का फूल हृदय के लिए लाभकारी होता है यह खराब कोलेस्ट्रॉल को कम कर रक्तचाप को स्वस्थ रखने में मदद करता है यह स्ट्रोक के जोखिम को कम करता है क्योंकि यह रक्त को पतला करने और रक्त में थक्का जमने से रोकता है।
2) इसका फूल त्वचा विकारों में लाभकारी है इसमें आवश्यक 'फैटी एसिड' होते हैं जो त्वचा को पोषण और नमी प्रदान करते हैं जो उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करते हैं और यह त्वचा की सूजन को कम करना, मुंहासों और अन्य त्वचा विकारों में एवं त्वचा की रंगत निखारने में सहायक होता है।
3) इसका फूल प्रजनन प्रणाली के लिये लाभकारी होता है। यह प्रीमेंस्ट्रअल सिंड्रोम और रजोनिवृत्ति के लक्षण कम करने में सहायक होता है। यह महिलाओं एवं पुरुषों में 'प्रजनन क्षमता' का विकास करता है। गर्भाषय कैंसर, डिंबग्रंथि कैंसर एवं गर्भाषय ग्रीवा के कैंसर के जोखिम को कम करता है।

अपराजिता का उल्लेख 'बृहन्त्रयी' ग्रंथों में नहीं है लेकिन यह 'सुश्रुत उत्तर तंत्र' में एक संदर्भ में पाया जाता है। 'चरक' ने 'श्वेत' और 'महाश्वेत' को 'सिरोविरेचनोपगा समूहों' के अंतर्गत उद्धृत किया है जिन्हें 'चक्रपाणि' ने क्रमश: 'श्वेत अपराजिता' और 'कैटभि' माना है। 'वैयाहस्थापन समूह' के अंतर्गत श्वेता का फिर से उल्लेख किया गया है लेकिन चक्रपाणि द्वारा इसकी पहचान श्रेयसी (रसना की एक किस्म) के रूप में की गई है। 'दलहण' ने एक स्थान पर 'क्षुद्र श्वेत' की पहचान सफेद फूल वाले 'सेफंदा' से की है।

जैन धर्म – अपराजिता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो विभिन्न रूपों में प्रकट होती है जैसे कि एक राजा, एक क्षेत्र, एक देवी और एक अनुत्तर विमान।

शैव धर्म – 'शैव धर्म' में अपराजिता को 'तुम्बर से जुड़ी देवियों' में से एक रुप में संदर्भित किया है। पौराणिक कथाओं में अपराजिता को 'दुर्गा' और 'काली' जैसी देवियों से जोड़ा जाता है।

वैज्ञानिक स्त्रोतों में अपराजिता की अवधारणा – अपराजिता जिसे 'क्लिटोरिया टर्नेटिया' के रूप में पहचाना जाता है अपने हेपटोप्रोटेक्टिव और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के लिये उल्लेखनीय है जो क्षेत्रीय पौधों के आधार पर यकृत स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आक्सीडेटिव तनाव से निपटने में इनके संभावित उपयोग को दर्शाती है। पीलिया Spleen Disorder में भी अपराजिता उपयोगी मानी जाती है। प्रसव पीड़ा में यदि महिला के कमर में अपराजिता की बेल लपेट दी जाय तो प्रसव पीड़ा शांत होती है। गठिया रोग में इसकी पत्ती उपयोगी है। अपराजिता की जड सर्प विष के असर को कम

करती है।

उपयोगी भाग – जड़, जड़ की छाल, पत्ता, फूल बीज

अपराजिता का महत्व

शब्द कोष संस्कृत अवधारणाऐं – 'अपराजिता' एक ऐसा शब्द जिसका विभिन्न संदर्भो में गहरा महत्व है, 'अजेय या अजेय होने की स्थिति' को दर्शाता है। जैन धर्म में यह 'अनुत्तर देवताओं' और 'अंगार की चोंची', पत्नी से जुडे 'दिव्य क्षेत्र' को दर्शाता है। 'वैष्णव धर्म' में इसे 'देवी दुर्गा' और उनकी 'अजेयता' के प्रतीक से जोड़ा जाता है। इसके अतिरिक्त 'आयुर्वेद' और 'रसशास्त्र' में यह 'चिकित्सकीय गुणों वाले एक औषधीय पौधेय को दर्शाता है। इसके अलावा ऐतिहासिक संदर्भो में यह शक्ति का प्रतीक है जो सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं में एक स्थायी विरासत को दर्षाता है।

उपसंहार – अपराजिता का पौधा आयुर्वेदिक औषधीय गुणों के कारण महत्वपूर्ण है। यह धार्मिक, ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह एन्टीऑक्सीडेन्ट होने के कारण इसके फूलों की चाय 'ब्लू टी' लोकप्रिय पेय पदार्थ के रूप में पहचानी जाती है। यह अपने औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में एक महत्वपूर्ण पौधा है।

References :

Ayurveda reference for Aparajita

(Clitoria ternatea Linn)

(1) आस्फोता गिरिकर्णीस्याद्विष्णुक्रांन्ता अपराजिता।
अपराजिते कटू मेध्ये: शीते कण्ठये सुदृष्टिदे।
कुष्ठ मूत्र त्रिदोशाय शोथ व्रण विषापहे।
कषाये कटुके पाके तिक्ते च स्मृति बुद्धि दे।

Shloka No. 111-112 Guduchydivarga, Bhava Prakash Nighantu, Indian Material Medica of S.R.I BHAVMISHRA (C. 1500 – 1600 A.D.)

The above shloka explains the synonyms, Properties and actions of the herb. Aparajita – The Synonyms of Aparajita are Asphota, Girikarni and Vishnukanta. These are two varieties in it and both of them are pungent, bitter and astringent in taste, useful as brain tonic, cold in potency, good for voice, imporves the cuteness of vision, useful in skin diseases, urinary diseases, Tridosha diseases, hemorrhoids, edima, ulcers and poisons. It is pungent in Post-digestive effect & promotes memory and intellect.

(2) wisdomlibrary https://www.wisdomlib.org.

(3) आयुर्वेद (जीवन विज्ञान) –

आयुर्वेद शब्दावली में अपराजिता

रसशास्त्र (रसायन विज्ञान और जड़ी बूटी खनिज तैयारियां)

अपराजिता – रसप्रकाश सुधाकर (अध्याय 9) के अनुसार अडसठ रसौशधियों में से एक जो पारे (रस) से संबंधित कीमिया प्रक्रियाओं में उपयोगी मानी जाने वाली बहुत शक्तिशाली औषधी है। (स्त्रोत – बुद्धि पुस्तकालय: रस शास्त्र)

निघंटु (औषधियों के पर्यायवाची और विशेषताएं तथा तकनीकि शब्द)

1. अपराजिता (संस्कृत, हिंदी और बंगाली में अपराजिता) अश्वक्षुरा का दूसरा नाम है। 13 वीं शताब्दी के राजनिघण्टु के श्लोक 3.87–3.89 के अनुसार यह औषधीय पौधा क्लिटोरिया टर्नेटिया (एशियाई कबूतर, तितली मटर या ब्लूबेलवाइन) से पहचाना जाता है।

(4) पाली अंग्रेजी शब्दकोश

अपराजिता पाली शब्दावली में

अपराजिता (वि.) अजेय

स्त्रोत : बुद्धशासन: संक्षिप्त पाली अंग्रेजी शब्दकोष

अपराजिता (सं.) (वैदिक अपराजिता, ए + अपराजिता)

अजेय सं. 269, जे. 1, 71, 165 पृष्ठ (52)

स्त्रोत : सुत्त : पाली टेक्स्ट सोसायटी का पाली–अंग्रेजी शब्दकोष

मराठी – अंग्रेजी शब्दकोश

(5) अपराजिता (अपराजिता) एक (एस) एक पौधा, कौवेकी की चोंच या क्लिटोरिया टर्नेटिया प्राचीन और आधुनिक ज्ञान का सबसे बड़ा स्त्रोत

- अपराजिता जड़ के नूटोपिक प्रभाव (2020 जे. आयुर्वेद इंटीग्र. मेड)
- फूलों के अर्क की एंटीऑक्सिडेन्ट गतिविधि (2021 IJNPR)
- चिंतारोधी गुण (2022 फाइटोमेडिसिन)

****